महाकविकालीदास की दृष्टि में नारी आदर्श

सुमित राय
Temporary Assistant Professor
Centre For Hindu Studies
Veer Narmad South Gujrat University, Surat
Mob. No. – 6307862732
Email- sbrai@vnsgu.ac.in

सारांश :-

संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास का स्थान सर्वोपरि है। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, प्रकृति, समाज तथा मानवीय मूल्यों का अत्यंत सजीव एवं आदर्शपरक चित्रण मिलता है। कालिदास के साहित्य में नारी केवल सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति नहीं है, अपितु वह त्याग, तप, प्रेम, करुणा, शिक्षा, मातृत्व एवं सहधर्मिणी के रूप में भारतीय जीवन-दर्शन की प्रतिनिधि भी है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य कालिदास के प्रमुख ग्रन्थों—कुमारसम्भव, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम् तथा मेघदूतम् - के आधार पर नारी के आदर्श स्वरूप का अध्ययन करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कालिदास ने नारी को सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के केन्द्र में प्रतिष्ठित किया है तथा उसे सम्मान, शिक्षा और नैतिक गरिमा से युक्त व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है।

प्रस्तावना:-

संस्कृत साहित्य के इतिहास में महाकवि कालिदास का नाम अनुपम प्रतिभा और काव्य-कौशल का पर्याय माना जाता है। उनकी रचनाएँ भारतीय सांस्कृतिक चेतना की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति हैं। कालिदास ने अपने काव्य में प्रकृति, प्रेम, धर्म, समाज तथा मानवीय सम्बन्धों का अत्यंत सूक्ष्म एवं कलात्मक चित्रण किया है। विशेषतः नारी के सम्बन्ध में उनकी दृष्टि अत्यन्त व्यापक, संवेदनशील और आदर्शोन्मुख है। यद्यपि प्राचीन भारतीय समाज में नारी की भूमिका अनेक सामाजिक मर्यादाओं से नियंत्रित थी, तथापि कालिदास ने अपने साहित्य में नारी को केवल आश्रित व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र भावनाओं एवं विशिष्ट गुणों से सम्पन्न चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

शोध-उद्देश्य :

1. कालिदास के साहित्य में नारी के विविध स्वरूपों का अध्ययन करना।
2. नारी के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आदर्शों का विश्लेषण करना।
3. कालिदास की नारी-दृष्टि का भारतीय जीवन-मूल्यों के संदर्भ में मूल्यांकन करना।

शोध-पद्धति :-

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन का आधार कालिदास के प्रमुख ग्रन्थ—कुमारसम्भवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम् तथा मेघदूतम्—हैं। आवश्यकतानुसार सहायक ग्रन्थों एवं आलोचनात्मक साहित्य का भी उपयोग किया गया है।

कालिदास की दृष्टि में नारी का स्वरूप :-

महाकवि ने अपने मौलिक उद्भावनाओं और उर्वर कल्पना-शक्ति से सामान्य पौराणिक कथा को अतुलनीय स्वरूप प्रदान किया है। मनुस्मृति में स्त्रियों के अधिकारों के विषय में कहा गया है-

पिता रक्षति कौमारे, भर्त्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा; न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ।। 1 (मनु० 9.3)

किन्तु कालिदास को नारी का यह स्वरूप ग्राह्य नहीं था। उनकी नायिकायें रूप-सौन्दर्य और प्रेमाभिव्यक्ति का प्रतिमान होने पर भी स्वाभिमानी, गर्विता और सत्यनिष्ठ दिखायी देती हैं। नारी सौन्दर्य के स्निग्ध और श्रृंगारिक स्वरूप का सर्वथा अनुपमेय चित्रण करने वाले कालिदास की नायिका त्याग से अनुप्राणित, तपस्या से पोषित तथा तपोवन में संवर्धित है, जो तत्कालीन प्रतिष्ठित नारी आदर्श का सुन्दर प्रतिबिम्ब हैं। पूर्व जीवन की तपस्या तथा परवर्ती जीवन के त्याग से समन्वित नारी-आदर्श की सुन्दर प्रस्तुति उनके काव्य का प्रमुख वैशिष्ट्य है। महाकवि ने नारी की महत्ता को चित्रित करते हुए कुमारसम्भव महाकाव्य में कहते हैं कि-प्रकाशाधिक्यवती ज्वाला से दीप के समान, लोकत्रय में प्रवाहित होने वाली गंगा से स्वर्ग के मार्ग के समान तथा व्याकरणात्मक शुद्धि वाली वाणी से विद्वान् के समान वह पर्वतराज हिमालय अपनी पुत्री पार्वती के जन्म से पवित्र तथा सुशोभित हुआ।

स्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च ।। 2 (कुमार 1/28)

हिमालय पार्वती से पवित्र भी हुआ और विभूषित भी। मैनाक के वर्णन में पूतत्व तथा विभूषितत्व की योजना क्यों नहीं की गयी? तत्त्व यह है कि जब तक कन्या नहीं उत्पन्न होती, तब तक कुल पवित्र नहीं होता। धर्मशास्त्रानुसार-

पिता न ज्ञायते यस्या भ्राता यदि न विद्यते।
नोपयच्छेत्तु तां कन्यां धर्मालोपभयात्सुधीः ।। 3

संस्कृत के कवियों ने नारी के सहज निरलंकृत सौन्दर्य की ही उपासना की है। कालिदास की शकुन्तला तो प्रकृति कन्या है। इनकी प्रकृति सुन्दर नारी को आभूषणों की आवश्यकता नहीं है। शकुंतला के अधरोष्ठ कोमल पत्ते के समान तथा इसकी दोनों भुजाएं अत्यंत कोमल शाखाओं के समान मृदुल प्रतीत होते हैं और अंगों में खिला हुआ यौवन लुभावने फूल के समान भासित है –

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनगंगेषु सन्नन्द्धम् ।। 4 (अभिज्ञान 1/22)

शकुन्तला की मधुर आकृति के लिए कौन-सी वस्तु मण्डन नहीं बन जाती। वह वल्कलवेष्टित होकर और भी अधिक मनोज्ञ हो गयी है-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि हिगांशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कनेनापि तन्वी किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।। 5 (अभिज्ञान 1-20)

महाकवि पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की मानों यह इच्छा थी कि वे एक ही स्थान पर सम्पूर्ण सौन्दर्य राशि को देख सकें अतएव उन्होंने बड़े प्रयत्नपूर्वक समस्त उपमानभूत पदार्थों को समुचित शरीरावयवों पर विन्यस्त करते हुए देवी को निर्मित किया-

सर्वोपमाद्रव्य समुच्चयेन यथा प्रदेशं विनिवेशितेन ।
सा निर्मित विश्वसृजा प्रयत्ना देकस्थसौन्दर्य दिदृक्षयेव ।। 6 (कुमार 1-49)

कालिदास की नायिकायें प्रकृति प्रेमी है। अभिज्ञान-शाकुन्तलम् की नायिका शकुन्तला पशु-पक्षियों एवं प्रकृति के अकृत्रिम सौहार्द से अत्यन्त आवृत है, उसका आश्रम वृक्षों पर भ्रातृवत् स्नेह है। उन्हें जल देकर ही वह जल ग्रहण करती है। प्रियमण्डना होने पर भी उनके किसलयों को नहीं तोड़ती तथा उनके पुष्पोद्गम पर उत्सव मनाती है-

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलंयुष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सवैरनुज्ञायताम्।। 7 (अभिज्ञान-4-11)

महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में स्त्रियाँ शिक्षित हैं पार्वती के विद्याग्रहण के सम्बन्ध में वर्णन है कि पार्वती स्थिरोपदेशा थीं अर्थात् जो कुछ उन्होंने एक बार या एक जन्म में पढ़ लिया है वह उन्हें कभी विस्मृत नहीं होता था। अतः उन्हें विद्याभ्यास के समय पूर्व जन्म की सभी विद्यायें स्वतः प्राप्त हो गयीं-

तां हंसमाला शरदीव गंगां महौषधिं नक्तमिवात्मभासः ।
स्थिरोपदेशा मुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः ।। 8 (कुमार 1.30)

अभिज्ञानशाकुन्तलम में कन्याएं पुरुषों की भांति ही शिक्षित हैं। अनुसूया प्रियम्वदा, शकुन्तला आदि सभी साक्षर है। अनसूया और प्रियम्वदा चित्रकला एवं प्रसाधनकला में निपुण है। रानी हंसपदिका संगीत एवं नाट्यशास्त्र की ज्ञाता है। शकुन्तला ने अपने मदनलेख में अपना प्रणय-भाव जिस मार्मिक ढंग से व्यक्त किया उससे उसकी भाव-प्रकाशन-क्षमता तथा शिक्षा का परिचय मिलता है-

तव न जाने हृदयं मम पुनर्मदनो दिवाऽपि रात्रिमपि।
निष्कृप ! तापयति बलीयस्तव हस्तमनोरथानि अंगानि ।। 9 (अभिज्ञान-3-13)

विवाह के पश्चात् पत्नी के रूप में नारी दूसरी ही भूमिका का निर्वाह करती है विवाह का उद्देश्य ही था-धर्माचरण। धार्मिक क्रियाएं पत्नी के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती थी। रघुवंश महाकाव्य में वर्णन है कि सीता का परित्याग कर देने के पश्चात् भी श्रीराम ने दूसरा विवाह नहीं किया अपितु अश्वमेघ यज्ञ के समय सीता की स्वर्णगयी प्रतिमा को सहधर्मिणी के रूप में स्थापित कर अनुष्ठान किया-

सीतांहित्वा दशमुखरिपुर्नोपयेमे यदन्यां
तस्यां एव प्रतिकृतिसखो यत्क्रतूनाजहार।
वृत्तान्तने श्रवणविषयप्रापिणा तेन भर्तुः
सा दुर्वारं कथमपि परित्यागदुःखं विषेहे।। 10 (रघुवंश 14/87)

रघुवंश महाकाव्य में अज अपनी पत्नी में नारी के समग्र रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं-

गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम् ।। 11 (रघुवंश 8/67)

अर्थात् तुम मेरी पत्नी भी थी, सम्मति देने वाली प्रियमित्र भी थी, एकान्त की सखी भी थी और गानादि विद्याओं, ललित क्रियाओं में प्रिय शिष्या भी थी। श्रीराम ने जब सीता का परित्याग कर दिया, तब सीता ने राम को कुछ भी अपशब्द नहीं बोला वो अपने ही भाग्य को कोसी, अपने ही पूर्वजन्मों का कर्म बोली और ईश्वर से यही प्रार्थना की कि अगले जन्म में भी मुझे श्रीराम ही पति के रूप में प्राप्त हो-

साहं तपः सूर्यनिविष्टदृष्टि रुध्वं प्रसूतेयश्चरितुं यत्तिष्ये।
भूयो यथा में जननान्तरेऽपि त्वमेव भर्ता न च विप्रयोगः।। 12 (रघुवंश 14-66)

भारतीय मान्यतानुसार पति ही नारी के सौन्दर्य एवं यौवन का उपभोक्ता है। पति के समीप न होने पर श्रृंगार की अभिलाषाएं मन में विलुप्त हो जाती हैं। मेघदूत में यक्षिणी की यही दशा है-रोने से उसकी आँखे सूजी है, अधरोष्ठ सूखे हुये है, बाल बिखरे हुए है-

नूनं तस्याः प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं प्रियाया
निःश्वासानामशिशिरतया भिन्नवर्णाधरोष्ठम् ।
हस्तन्यस्तं मुखमसकव्यक्ति लम्बालकत्वा
दिन्दोदैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति ।। 13 (उत्तरमेघ 21)

वृद्धजनों के आशीर्वाद एवं उपदेशों से भी उस युग के प्रतिष्ठित नारी-आदर्श का हमें परिचय मिलता है। महर्षि कण्व ने पतिगृह जाते समय शकुन्तला को उपदेश दिया कि कुलीन नारी को निरर्थक विषयों में समय नष्ट न कर गुरुजनों की सेवा-शुश्रूसा करना सपत्नीजनों के साथ सविनय व्यवहार करना पति से उपेक्षित होने पर भी क्रोध न करना, ऐश्वर्य का अभिमान न करना आदि का उपदेश दिया-

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ।। 14 (अभिज्ञान 4-18)

पत्नी के पश्चात् माता के रूप में भी नारी का आदर्श दृष्टिगत होता है सन्तान के महत्त्व के कारण ही माता का विशिष्ट एवं सम्मानीय स्थान होता है। पुत्रवती नारी वंश परम्परा की अविच्छिन्नता की विधात्री होने के कारण वह कुल की प्रतिष्ठा होती है। इसलिए राजा दिलीप और उनकी पत्नी सुदक्षिणा सन्तान प्राप्ति हेतु नन्दिनी गौ की सेवा की। गौ-सेवा के फलस्वरूप उन्हें पुत्र प्राप्ति हुई। अभिज्ञानशाकुन्तलम में महर्षि कण्व ने शकुन्तला को यह आशीर्वाद दिया कि शर्मिष्ठा की तरह पति की अतिप्रिय नारी बनना, एवं वीर पुत्र को जन्म देना-

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्वहुमता भव।
पुत्रं त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवापनुहि।। 15 (अभिज्ञान 4-7)

निष्कर्षतः

हम कह सकते हैं कि कालिदास की रचनायें नारियों के विविध स्वरूप को दर्शाती है-

(क) कुमारसम्भव के प्रथम सर्ग में माता पार्वती के बाल्यावस्था से कौमार्यावस्था तक के नारी की चंचलता की अनुपम छटा है।

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कवि ने शकुन्तला के सौन्दर्य का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है जो नारी के सौन्दर्य का सर्वोत्कृष्ट रूप है और नारी को प्रकृति प्रेमी भी बताया है।

(ग) रघुवंशमहाकाव्य में नारी को पत्नी के विविध रूप को चित्रित किया है।

(घ) मेघदूत में नारी की विरह अवस्था का अत्यन्त मार्मिक वर्णन है जो प्रेम का सर्वोच्च रूप है।

उपर्युक्त स्वरूपों में नारी के आदर्शों को वर्णित किया गया है कवि ने नारी के समस्त पक्षों पर अपना लेखन किया है। इससे यह ज्ञात होता है कि उस समय नारी समाज में सम्माननीय एवं पूजनीय थी उसे सभी अधिकार प्राप्त थे।

सन्दर्भ सूची :

1. प्रलयंकर प्रवीण, 2004, मनुस्मृति, प्रथम भाग, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली, पृ० 916
2. पाण्डेय उमेशचन्द्र, 2003, कुमारसम्भवम् प्रथम सर्गः, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर, पृ० 55
3.पाण्डेय, अमरनाथ, 2013, कालिदास, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पृ० 148
4. राय, गंगासागर, 2009, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पृ० 36
5. गुप्त, शिवशंकर, 2006, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ० 24
6. मुसलगाँवकर, राजू (राजशेखर), 2001, कुमारसम्भवम् प्रथम सर्गः, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी, पृ० 95
7. शास्त्री, नवकिशोरकर, 2010, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चौखम्भा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी, पृ० 279
8. शास्त्री, जगदीशलाल, 1975, कुमारसम्भवम्, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी. पृ० 33
9. द्विवेदी, कपिलीदेव, 2012, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद, पृ० 159
10. चतुर्वेदी, सीताराम, 2006, कालिदास ग्रन्थावली, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, पृ० 140
11. शर्मा, उमाशंकर, 2014, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, पृ० 215
12. द्विवेदी, रेवा प्रसाद, 1986, कालिदास ग्रन्थावली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ० 272
13. रेग्मी, शेषराज, 2013, मेघदूत, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, पृ० 181
14. द्विवेदी, कपिलदेव, 2012, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रामनारायणलाल विजय कुमार, इलाहाबाद, पृ० 229
15. वही, पृ० 211